प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

[हिन्दी]

गृह मंत्री (श्री लालकृष्ण आडवाणी) : मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

[अनुवाद]

सामयिक अध्यक्ष महोदय : प्रश्न यह है :

"कि श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा के अध्यक्ष के रूप में चुना जाए।"

प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

सामयिक अध्यक्ष महोदय : प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी को इस सभा का अध्यक्ष निर्वाचित घोषित किया जाता है। मैं उन्हें अध्यक्ष का आसन ग्रहण करने के लिए आमंत्रित करता हूं।

सदन के नेता श्री अटल बिहारी वाजपेयी और विपक्ष के नेता श्री शरद पवार श्री गन्ति मोहनचन्द्र बालयोगी को अध्यक्षपीठ तक ले गए।

[**अध्यक्ष महोदय (श्री जी०एम०सी० बालयोगी)** *पीठासीन हुए*]

अपराह्न 4.09 बजे

अध्यक्ष को बधाइयां

[हिन्दी]

प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी) : अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष पद पर निर्वाचित किए जाने के लिए मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं और आपका अभिनन्दन करता हूं। आप लोक सभा के लिए नए नहीं हैं। 10वीं लोक सभा के सदस्य के रूप में हम आपकी क्षमता और आपके योगदान से परिचित हैं। ग्रामीण विकास और कृषि में आपकी विशेष रूचि रही है। और इन विषयों पर आपके भाषण पिछली लोक सभा में हमने सुने थे। लोक सभा से पहले आप जिला परिषद के माध्यम से अपने क्षेत्र और समाज की सेवा करते रहे हैं।

आप कानून के विद्यार्थी रहे हैं। गरीबों को, दलितों को एडवोकेट के नाते आपके लैवल पर सहायता मिलती रही है। आज जब देश स्वतंत्रता की 50वीं वर्षगांठ मना रहा है तो यह बड़े गौरव की बात है कि अनुसूचित जाति का एक सम्माननीय सदस्य लोक सभा अध्यक्ष के पद को अलंकृत कर रहा है। यह बदलते हुए वक्त का सूचक है। यह युग परिवर्तन का द्योतक है।

अध्यक्ष महोदय, आपने बड़ा कठिन कार्य सम्भाला है और यह कार्य बड़े कठिन समय में सम्भाला है। जनता ने अपना आदेश दे दिया। इस सदन की जो गठन के बाद शक्ल बनी है, वह आपके काम को और भी मुश्किल बनाती है, लेकिन आप ऐसे आसन पर बैठे हैं जिसे सरदार विट्ठल भाई पटेल ने सुशोभित किया था, श्री मावलंकर इस सदन का संचालन कर चुके हैं। इस सदन के दो पूर्व अध्यक्ष श्री शिवराज पाटिल और श्री संगमा इस समय सदन में उपस्थित हैं। *(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, अध्यक्षपीठ में, अध्यक्ष में आसन में कुछ ऐसी गुणवत्ता है कि *(व्यवधान)*

कुमारी मायावती (अकबरपुर) : कि आप ही यदि उनका दुरुपयोग करें तो *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कुमारी मायावती जी कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इस आसन पर बैठने वाले को अपने दायित्व का निर्वाह करने के लिए भेजा जाता है। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया आप सभी बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

एक माननीय सदस्य : एक दलित महिला बोल रही हैं, सुन लीजिए। *(व्यवधान)*

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : हम सभी जो पुरानी पद्धतियां हैं, *(व्यवधान)* विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठकर *(व्यवधान)* अपनी कुशलता दिखाई थी। *(व्यवधान)*

एक माननीय सदस्य : दलितों की दुहाई दे रहे हैं तो दलित महिला की बात सुन लीजिए अटल जी। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : यह सदन का एक कठिन काम को सरल बना सकता है अगर यह सदन नियमों के अनुसार चले। हम विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र होने का दावा करते हैं और यह दावा सही भी है लेकिन *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छी बात नहीं है। आप लोग बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री आरिफ मोहम्मद खां (बहराइच) : प्रधान मंत्री जी सदन की परिपाटियों से भली-भांति परिचित हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी एक मिनट के लिए भी बोलने का मौका नहीं देते हैं। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री आरिफ मोहम्मद खां, कृपया बैठ जाइए। आपको बोलने का मौका मिलेगा।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

[हिन्दी]

श्री मुकुल वासनिक (बुलढाना) : अध्यक्ष महोदय, यह एक दलित महिला की आवाज दबाने की कोशिश होगी। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : महोदय, मुझे अपनी बात जारी रखने दीजिए।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब बात कर रहे हैं, आप बैठिये।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : आपको बोलने की अनुमति दी जाएगी।

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई देने के लिए खड़ा हुआ हूं। यह बधाई का अवसर टोका-टाकी का अवसर नहीं है, टोका-टाकी के बहुत अवसर मिलेंगे। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री जी को अपनी बात जारी रखने दें।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : नहीं, यह ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अरिफ मोहम्मद खां : महोदय, वे न केवल प्रधान मंत्री है बल्कि एक अनुभवी सांसद भी हैं। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : प्रधान मंत्री को अपनी बात जारी रखने दें। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : आपको भी मौका देंगे। कृपया आप बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

आपको बोलने का मौका दिया जाएगा।

(व्यवधान)

श्री अरिफ मोहम्मद खां : महोदय, मैं औचित्य का एक का प्रश्न उठना चाहता हूं।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब बोल रहे हैं, हम आपको भी मौका देंगे।

(व्यवधान)

[अनुवाद]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मुझे अपनी बात पूरी करने दीजिए। *(व्यवधान)*

[हिन्दी]

यह क्या भाषण दे रहे हैं? *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

श्री अरिफ मोहम्मद खां : प्रधान मंत्री को इतना कृपालु होना ही चाहिए कि बसपा के नेता को बोलने की अनुमति दें क्योंकि वह महिला अनुसूचित जाति से भी संबंधित है। महोदय हम स्वतंत्रता के पचासवें वर्ष में हैं। क्या वे बसपा की नेता, जो अनुसूचित जाति से संबंधित हैं को अपनी बात कहने की अनुमति नहीं देंगे उन्हें उन पर कुछ कृपा करनी चाहिए। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह आपको शोभा नहीं देता क्योंकि प्रधान मंत्री जी बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : अब प्रधान मंत्री जी बोल रहे हैं। इसलिए व्यवधान डालना ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : कृपया शांत हो जाइए। प्रधान मंत्री जी बोलने के लिए खड़े हैं।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : महोदया, कृपया बैठ जाइए। यह ठीक नहीं है।

(व्यवधान)

श्री अजीत जोगी (रायगढ़) : महोदय, उन्हें दलित महिला सदस्य की बात सुनने दें।

[हिन्दी]

अध्यक्ष महोदय : प्राइम मिनिस्टर साहब बोल रहे हैं, आप बैठिये

(व्यवधान)

श्री विलास मुत्तेमवार (नागपुर) : आप उनको सुन तो लीजिए *(व्यवधान)*

श्री मुकुल वासनिक (बुलढाना) : अध्यक्ष महोदय, क्या एक दलित महिला को बोलने नहीं दिया जायेगा जो गरीबों की दुहाई देने की कोशिश कर रही है। *(व्यवधान)* अध्यक्ष महोदय, ये दलितों की दुहाई देते हैं और दलित सदस्य को बोलने का समय नहीं दे रहे हैं। *(व्यवधान)*

श्री अजीत जोगी : अध्यक्ष महोदय, हम इसलिए कह रहे हैं कि दलित महिला को बोलने का समय दीजिए। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदय : प्रधानमंत्री जी बोलने के लिए खड़े हैं।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

कुमारी ममता बनर्जी (कलकत्ता दक्षिण) : अध्यक्ष महोदय, ये लोग शोर क्यों कर रहे हैं? ऐसे अवसर पर ऐसी बातें नहीं कही जाती हैं। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : आप कृपया बैठ जाइए। सबको बोलने का मौका दिया जाएगा। प्रधान मंत्री बोल रहे हैं।

(व्यवधान)

सूचना और प्रसारण मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज) : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्या को मालूम होना चाहिए कि ऐसे अवसर पर इस प्रकार से व्यवधान खड़ा नहीं करते हैं। वे अपनी पार्टी की नेता हैं, उनको जब बोलने का अवसर मिले, तब वे अपनी बात कह सकती हैं। *(व्यवधान)*

श्री सत्यपाल जैन (चंडीगढ़) : सदन में प्रतिपक्ष के नेता मौजूद हैं। मेरा उनसे आग्रह है कि वे इनको चुप कराएं। यदि इस प्रकार से ये प्रधान मंत्री महोदय को बोलने से रोकने का प्रयास करेंगे, तो हम उन्हें बोलने की अनुमति नहीं देंगे। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : कृपया बैठ जाइए। प्रधान मंत्री महोदय बोल रहे हैं। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

श्री आरिफ़ मोहम्मद खां : अध्यक्ष महोदय, मेरा आग्रह है कि आप दलित महिला की बात सुन लीजिए। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : इस प्रकार से बीच में बोलना अच्छा नहीं है। कृपया आप बैठ जाइए।

श्रीमती सुषमा स्वराज : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य परिपाटी की बात कह रहे हैं, उन्हें मालूम होना चाहिए कि यह अवसर उनके बोलने का नहीं है। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : जब प्रधान मंत्री जी बोल रहे है, तो व्यवधान डालना ठीक नहीं है। कृपया बैठ जाइए।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री आरिफ मोहम्मद खां : अध्यक्ष महोदय, मैं आपसे सिर्फ इतना ही कह रहा हूं कि माननीय प्रधान मंत्री एक मिनट के लिए बैठ जाएं और दलित महिला की बात सुन लें। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

अध्यक्ष महोदय : श्री आरिफ मोहम्मद खां, मैंने आपको बोलने की अनुमति नहीं दी है।

(व्यवधान)

[हिन्दी]

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, यदि अध्यक्ष को बधाई देना भी अपराध है, तो मैं जरूर अपराधी हूं। *(व्यवधान)*

अपराह्न 4.29 बजे

तत्पश्चात् कुमारी मायावाती तथा कुछ अन्य माननीय सदस्य सभा-भवन से बाहर चले गए।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, लोक सभा के चुनाव के बाद हम पहली बार आज यहां एकत्र हुए हैं और मैं तो प्रतिपक्ष को धन्यवाद देना चाहता था विशेषकर प्रतिपक्ष के नेता श्री शरद पवार जी को, जिन्होंने आपका सर्वानुमति से निर्णय कराने में सहयोग दिया। *(व्यवधान)* लोकतंत्र में सरकारें बदलेंगी। कल मैं प्रतिपक्ष में बैठा था। 40 साल में, छोटे से कालखंड को छोड़कर मैंने प्रतिपक्ष से देश की सेवा की है। सदन में योगदान दिया हैं जनता का निर्णय शिरोधार्य होना चाहिए। *(व्यवधान)* मुट्ठी भर सदस्यों को इस सदन में सारे काम-काज को अस्त-व्यस्त करने का अधिकार नहीं होना चाहिए। ऐसा मौका नहीं मिलना चाहिए।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह कहने जा रहा था कि यह सदन आज की कठिनाइयों को कम कर सकता है, अगर सदन नियमों के अनुसार चले, अगर सदस्य अपने आचरण, अपने वक्तव्य में गारिमा का पालन करें। *(व्यवधान)* आज सारी दुनिया हमारे सदन की ओर देख रही है। जो देश अभी-अभी आजाद हुए हैं और जिन देशों ने अभी लोकतंत्र अपनाया है, वे हमारे यहां लोकतंत्र की शिक्षा लेने के लिए, पाठ पढ़ने के लिए आते हैं। पता नहीं हम कौन सा पाठ उन्हें पढ़ाना चाहते हैं। आज जो कुछ हुआ है, वह पाठ पढ़कर यदि वे अपने देश में गये, तो फिर लोकतंत्र का भविष्य अंधकार में पड़ सकता है। *(व्यवधान)*

अध्यक्ष महोदय : यह अच्छी बात नहीं है।

(व्यवधान)

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, मैं एक बार फिर आपको बधाई देता हूं। आपका अभिनंदन करता हूं और आपको विश्वास दिलाता हूं कि आप सदन के सभी सदस्यों के अधिकारों की रक्षा के काम में हमारा पूर्ण सहयोग पायेंगे।

श्री शरद पवार (बारामती) : अध्यक्ष महोदय, आपका अभिनंदन करने के लिए मैं यहां खड़ा हुआ हूं। संसदीय लोकतंत्र का यह सर्वोच्च मंदिर है और इसके नेतृत्व की जिम्मेदारी आज आपके कंधों पर पड़ी हैं इस देश की सभी विधान सभायें, विधान परिषदें हमेशा इस संसद की तरफ से मार्गनिर्देशन लेती हैं और इसलिए आपके ऊपर बड़ी जिम्मेदारी है। भारतीय लोकतंत्र में, संसदीय लोकतंत्र में अध्यक्ष पद सबसे महत्वपूर्ण पद है। इस देश में उसकी इज्जत है। दुनिया के सबसे बड़े प्रजातंत्रीय देश के रूप में भारत की तरफ दुनिया के लोग देखते हैं, पूछते हैं। दुनिया में बहुत से पार्लियामैंट्री इंस्टीट्यूशन्स हैं, उन सबमें भारत की लोक सभा के अध्यक्ष का एक विशेष स्थान है। कॉमनवैल्थ पार्लियामैंट्री एसोसियेशन हो या अन्य दुनिया के पार्लियामैंट्री संगठन हों, सभी में भारत के लोक सभा अध्यक्ष का एक महत्वपूर्ण स्थान है और यह जिम्मेदारी पूरा करने का काम अब आपको करना पड़ेगा। सदन के नेता ने जो कहा है, उनसे मैं सहमत हूं कि इस पद पर बहुत मान्यवर व्यक्तियों ने, इस देश के संसदीय लोकतंत्र की मजबूत करने के लिए, बहुत